ماہنامہ شعاعِ عمل لکھنؤ

اپریل ۲۰۱۰ء

قَالَ اللّٰهُ تبارَکَ وتَعالیٰ قَدْ جَاءَکُمْ مِنَ اللّٰهِ نُورٌ وَکِتَابٌ مُبِینٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب

موسسۂ نور ہدایت، حسینیہ غفرانمآبؒ، چوک، لکھنؤ۔۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postel Regd.No. SSP/LW/NP-75/2008-10
P.O. Chowk, Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

SHUA-E-AMAL

Lucknow

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

April 2010

NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION
Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Phone : 2252230

वर्ष-6

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2008-10
P.O. Chowk. Dispatch Date: 2 & 6 of every month

अंक-10

अप्रैल - 2010

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन की

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ-ए-अमल

''लखनऊ''

संरक्षक

मौलाना सै. कल्बे जवाद नक़वी साहब

सम्पादक

सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी

सलाहकारी परिषद

प्रोफ़ेसर अल्लामा सै० अली मुहम्मद नक़वी, प्रोफ़ेसर सै० हुसैन कमालुद्दीन अकबर,
प्रोफ़ेसर सै० इमरान हैदर, मु० र० आबिद, सैय्यद समीउल हसन वसीम, तज़्हीब नगरौरी

वार्षिक - 200 रु

मिलने का पता

क़ीमत - 20 रु

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ - 3 (उ.प्र.) भारत। फोन न० 0522-2252230

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ-ए-अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर-ए-हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ-3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै० मुस्तफा हुसैन नक़वी 'असीफ जाएसी'।

मजलिसे इदारत

- डॉ० अमानत हुसैन
- सै० सुफ़यान अहमद नदवी
- तज़हीब नगरौरी
- डॉ० आरिफ़ अब्बास
- मिर्ज़ा हुमायूँ क़दर

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526

Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2008-10

WEBSITE:
www.noorehidayat.com
www.al-ijtihaad.com

E_mail:
noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com

ज़रे सालाना

1- यूरोप, अमरीका, कनाडाः
80 अमरीकी डालर
2- ख़लीजी मुमालिकः
60 अमरीकी डालर
3- एशिया, पाकिस्तानः
40 अमरीकी डालर
4- पाकिस्तान ज़मीनी डाकः
20 अमरीकी डालर

लाइफ़ मेम्बरशिपः 4000/-

...अरबईन नम्बर 1431 हि०....

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

(फरवरी-मार्च 2010 ई० सफ़र-रबीउलअव्वल-1431 हि०)

न० मज़मून व लेखक	पेज
1— मजलिसे शामे ग़रीबाँ आयतुल्लाह सै० कल्बे हुसैन नक़वी ता०स०	3
2— हुसैन—हुसैनः एक परिचय सैय्यिदुल उलमा सै० अली नक़वी नक़वी ता०स०	8
3— इस्लाम पोथी अल्लामा नज्म आफ़न्दी	10
4— आज़ाद भारत से करबला की याद की माँग सैय्यिदुल उलमा सै० अली नक़वी नक़वी ता०स०	15
5- मुख्य समाचार इदारा	19

FORM-IV
(See Rule No-8)

1. Place of Publication:	Noorehidayat Foundation Imambara Ghufranmaab, Maulana Kalbe Husain Road, Chowk, Lucknow
2. Periodicity:	Monthly
3. Printer's Name:	Syed Kalbe Jawad Naqvi
Whether citizen of India:	Yes
Address:	39, Jauhari Mohalla, Chowk, Lucknow
4. Publisher's Name:	Syed Kalbe Jawad Naqvi
Whether citizen of India:	Yes
Address:	39, Jauhari Mohalla, Chowk, Lucknow
5. Editor's Name:	Syed Mustafa Husain Naqvi
Whether citizen of India:	Yes
Local Address:	Imambara Ghufranmaab, Maulana Kalbe Husain Road, Chowk, Lucknow
Permanent Address:	Mohalla Syedana, Qasba Jais, Distt. Raibareli (U.P.)
6. Owner's Name:	Syed Kalbe Jawad Naqvi
Whether citizen of India:	Yes
Address:	39, Jauhari Mohalla, Chowk, Lucknow

I Syed Kalbe Jawad Naqvi, hereby declare that the particulars given are true and correct to the best of my knowledge and belief.

Lucknow — Syed Kalbe Jawad Naqvi
Date: 28-02-2010 — Printer and Publisher

मुसलमानों का वास्तविक बहुदल

आयतुल्लाहिलउज़्मा सैय्यिदुलउलमा सै० अली नक़ी नक़वी ताबा सराह
अनुवादक - मिर्ज़ा सज्जाद हुसैन

करबला की हृदयविंधायक घटना का एक विशेष पहलू

साधारणतया इस्लाम की उन्नति का जो मापदण्ड समझा गया है उसके अनुसार तो इस्लाम का स्वर्ण काल विभिन्न समयों को समझा जा सकता है। बहुत सम्भव है कि उस समय को इस्लाम का स्वर्णकाल कहा जाये जब रोम और फ़ारस जैसे विशाल देशों पर इस्लाम की विजय पताका लहरी। सम्भव है वह युग समझा जाये जब संसार का ख़िराज सिमट-सिमट कर इस्लामी कोष (बैतुलमाल) में आ रहा था और राज्य की सीमा इतनी विस्तृत हो गई थी कि सामने दिखाई देने वाला बादल राजा की जिन्हा से संतुष्ट हृदय के साथ यह शब्द कहलवाता है कि जहाँ तुझे जाना हो जा और बरस, तेरी वर्षा से लाभ होगा वह मेरे ही कोष में आयेगा। संभव है वह समय मुसलमानों की जनसंख्या के आधिक्य का उच्चतम एवं अन्तिम बिन्दु समझा जाये जब संसार में इस्लाम के अतिरिक्त किसी दूसरे धर्म का नाम लेने वाला डरता था और यह समझता था कि मुझे जज़िया देने की आपत्ति का न समाना करना पड़े। किन्तु वास्तव में क्या यह नाम की जनसंख्या-आधिक्य सच्चे मुसलमानों की थी क्या जितनी जनसंख्या सरकारी दफ़्तरों में मुसलमनों की लिखी जाती थी वह इस्लाम के दृष्टिकोणानुसार भी इस्लाम के अनुयायियों की थी।

जहाँ तक इस्लाम की आत्मा और उसके वास्तविक भूषण (गुण) का सम्बन्ध है मैं निडरता से यह कह सकता हूँ कि इन इस्लाम की उन्नतियों में बहुत से समय वह हैं जो इसके पतन कहे जाने के योग्य हैं।

इसके विपरीत यदि इस्लाम की अत्यन्त निर्दयता एवं पतन का समय संसार से पूछा जाये तो वह अतिशीघ्र कर्बला की घटना के समय का नाम लेगा वह यह कहेगा कि इससे बढ़कर इस्लाम के पतन का कोई और समय नहीं एवं निःसन्देह इस प्रकार से यह उचित भी है कि स्वयं रसूल का पुत्र (इमाम हुसैन) इस्लाम के नाम लेने वालों के हाथ से मृत्यु को प्राप्त हुआ। किन्तु जब मैं एक दूसरे दृष्टिकोण से दृष्टि डालता हूँ तो मुझे ज्ञात होता है कि इस्लामी की वास्तविक जनसंख्या का यदि कहीं प्रदर्शन हुआ है तो वह कर्बला की घटना के समय न इस से पहले कभी और न इसके बाद। ये एक विचित्र बात मालूम होगी किन्तु थोड़े से धैर्य एवं सोच विचार के पश्चात् सभी बुद्धिमान व्यक्ति मेरे विचार से सहमत हो जायेंगे।

इस्लाम की शिक्षा अल्लाह पर विश्वास, सत्य मार्ग पर दृढ़ रहना एवं वास्तविकता के मार्ग में अडिगता एवं दृढ़ निश्चयता, मुझे इस दृष्टिकोण से इस्लाम की जनसंख्या का पता लगाना है।

मुझे सबसे पहले हज़रत मुहम्मद[स०] का समय दृष्टिगोचर होता है लोग कहते हैं कि आप ही के समय में मुसलमानों की जनसंख्या एक लाख तक पहुँच गयी थी। संभव है यह उचित भी हो क्योंकि हज़रत मुहम्मद

के साथ आपके जीवन के अन्तिम हज में हज करने वाले लगभग इतने ही थे किन्तु मुझे जिस प्रकार के इस्लाम की खोज है मैं स्पष्ट कहूँगा कि रसूल (हज़रत मुहम्मद) के समय में उसकी संख्या अत्यन्त अल्प थी। इतिहास के पृष्ठ साक्षी हैं कि हज़रत मुहम्मद के ओहद के युद्ध में साथ देने वाले उतने भी न थे जितनी दो हाथों की उंगलियाँ संभव हैं कहा जाये कि ये रसूल के प्रारंभिक युद्धों का समय था किन्तु शोक है कि हुसैन का युद्ध जो हज़रत मुहम्मद[स॰] के अन्तिम समय में हुआ है, इस समय भी इतिहास के पृष्ठ साक्षी हैं सात आदमियों से अधिक नहीं रहे थे। इसके पश्चात् हज़रत मुहम्मद स्वर्गवासी हो गये तथा आपके पश्चात् ख़लीफ़ाओं के समयों में इस्लाम के अनुयायियों की संख्या में अत्याधिक वृद्धि हुई किन्तु क्या मुसलमानों की वह जनसंख्या जो ओहद और हुनैन में प्रकट हुयी थी उसमें वास्तव में वृद्धि हुयी। जाने दीजिये शियों के दृष्टिकोण को वह इस युग में वास्तविक इस्लाम को बहुत थोड़े लोगों में सीतिम समझे हुये हैं किन्तु आप उस इस्लाम के दृष्टिकोण से देखिये जो संसार में विजय-दुन्द भी बजा रहा था क्या इस्लामी आत्मा (वास्तविकता) अधिकतर मुसलमानों में उत्पन्न हुयी थी। इस्लाम के ख़लीफ़ा, समस्त इस्लामी देशों के शासक को घर में घेर लिया गया है, परदेस नहीं है, अपना ही राज्य-स्थान है, कोष एवं धनादि सभी कुछ है एवं परदेशी (विदेशी) आक्रमण कर रहे हैं किन्तु ख़लीफ़ा का साथ देने वाले इस इस्लामी जनसंख्या में से जो उसे उचित ख़लीफ़ा मानते हैं कितने आदमी हैं। विदेशी शत्रु आपने कार्य में सफ़ल होते हैं, ख़लीफ़ा की हत्या कर डालते हैं, शव को मुसलमानों के क़ब्रिस्तान में तीन दिन के बाद भी नहीं गाड़ने (दफ़न होने) देते किन्तु उन मुसलमानों के रक्त में कोई प्रवाह नहीं तथा मदीने की भूमि पर कोई परिवर्तन नहीं होता। इसके पश्चात् हज़रत अली की ख़िलाफ़त के समय में विभिन्न प्रकार के उदाहरण मिलते हैं जहाँ आपके साथ वाले मुसलमान जो वास्तव में वह ही थे जो आप को चौथा ख़लीफ़ा एवं एक धार्मिक शासक के रूप में मानते थे वही बात-बात पर आपका विरोध करते थे तथा नहजुल बलाग़ा के पृष्ठ इन शिकायतों से भरे पड़े हैं जो आपकी ज़बान से इन मुसलमानों के कर्मों पर की गयी है।

मैं नहीं समझ सकता कि इसके पश्चात् कौन सा समय इतिहास प्रस्तुत कर सकता है जिसमें मुसलमानों की वास्तविक जनसंख्या का मुझे ज्ञान हो सके किन्तु मैं सच कहता हूँ कि करबला की घटना एक वह अद्वितीय उदाहरण है जिसमें इस्लाम की वास्तविक आत्मा तथा दृढ़ निश्चयी मुसलमानों की संख्या का उच्चतम बिन्दु समझा जा सकता है।

वह हुसैन के साथी थे जो प्रसिद्ध है कि 72 थे किन्तु ऐतिहासिक आधार पर 100 से कुछ अधिक थे मैं सच कहता हूँ कि यह जनसंख्या वह थी जो हज़रत मुहम्मद के समय में 7-8 से न बढ़ी तथा इसके पश्चात् भी कभी इतनी अधिक संख्या वास्तविक मुसलमानों की प्रकट नहीं हुई जितनी करबला के युद्ध में। हुसैन ने सम्पूर्ण संसार के समक्ष मुसलमानों का एक उदाहरण (नमूना) सामूहिक रूप में प्रस्तुत कर दिया जिसका उदाहरण (समकक्ष) इतिहास प्रस्तुत नहीं कर सकता। कोई भी धर्म इतनी वास्तविक जनसंख्या अपने अनुयायियों की एक ही समय में प्रस्तुत नहीं कर सकता जो इतने अधिक कष्ट पड़ने पर भी सत्य मार्ग से न हटे हों यहाँ तक कि प्राण भी दे दिये हों।

हुसैन संसार में सबसे प्रथम एवं अन्तिम बार वास्तविक मुसलमानों के सामूहिक संगठन का उदाहरण प्रस्तुत करना चाहते थे तथा इसके लिए यदि संसार आपके चुनाव की प्रशंसा न करे तो अन्याय है, बहुत से साथ थे मगर आप ने यत्नपूर्वक समूह की संख्या में ह्रास किया ताकि शुद्ध सत्य में असत्य का नाम भी न हो। वह अपने साथ वाले समूह को एक वास्तविक इस्लामी संगठन के रूप में प्रस्तुत करना चाहते थे। यदि उन में से किसी एक मनुष्य से भी कोई त्रुटि (दोष) हो जाता तो सम्पूर्ण समूह की वह महानता शेष न रह सकती थी।

मैं सत्य कहता हूँ कि मुबाहले में रसूल को वास्तविक मनुष्य उतने ही मिले थे जितने उनके साथ थे तथा जो बिल्कुल उनके (रसूल) के थे वरना हज़रत

बक़िया......... पेज 9 पर

नबी(स0) की सीरत

अल्लामा सै० मुहम्मद रज़ी साहब क़िबला, कराची

नून और क़सम है क़लम की और उसकी जो कुछ वह लोग लिखते हैं। तुम अपने परवरदिगार के फ़ज़्ल से मजनून नहीं हो और बेशक तुम्हारे लिये बेइन्तेहा सवाब है और यक़ीनन तुम बड़े आला दर्जे के अख़लाक़ वाले हो और अनक़रीब तुम भी देख लोगे और ये लोग भी देख लेंगे कि तुम में से मजनून कौन है।

इल्मो कमाल से बेख़बर दुनिया वाले नबी अरबी[स०] को अल्लाह की पनाह मजनून कहा करते थे इसलिए कि इन लोगों में इतनी अक़्ल न थी कि वह नुबुव्वत के मरतबे की बुलन्दी और बड़ाई को समझ सकते बिल्कुल उसी तरह जैसे एक अन्धा दिन को रात समझता है क्योंकि उसकी आँखों में बसारत ही नहीं जिस से वह दिन की रौशनी को देख सके बस उसी तरह वह लोग जो बातिनी नूर से महरूम थे और जिनकी रूह जेहालत के अंधेरों में गुम थी वह रिसालत की चमकती हुई शुआओं को किस तरह देख सकते और उनकी समझ में ये बात किसी तरह आती कि एक इन्सान ऐसा भी हो सकता है जिसे अल्लाह अपनी रिसालत का मन्सबे जलील अता फ़रमाए और उसको वह मक़ामे क़ुर्ब इनायत करे जो किसी दूसरे को हासिल न हो, उस पर अपनी किताब उतारे और वह्यि नाज़िल फरमाये और वह तमाम कायनात को हिदायत के रास्ते पर लगाने का फ़र्ज़ अन्जाम दे और आलम की कोई कुव्वत इस अज़ीमुश्शान और अल्लाह के बरगुज़ीदा बन्दे को उसके फ़र्ज़े हिदायत को अन्जाम देने से रोक न सके और वह पाक इन्सान दुनिया में ज़ाहिर होकर बनी नौए बशर को इस सही मक़ाम व मन्ज़िलत व इज़्ज़त से आगाही बख़्शे जो उसे कायनात के समाज में हासिल है वह रहबरे कामिल पूरी इन्सानियत के रहबरी फ़रमाए और उसे जेहालत के अंधेरों से निकाल कर रुश्दो हिदायत के उजालों में ले आए और उन चीज़ों की पूजा से उसे नजात लिदाए जो ख़ुद उसकी ख़िदमत के लिए पैदा की गई हैं चूँकि जाहिल और ग़ाफिल इन्सानों के ज़मीर इन हक़ीक़तों को नहीं जानते थे और मारफ़त व फ़िक्र की इस बुलन्द सतह से बहुत पस्त थे। इसलिए जब वह ये देखते थे कि रसूले अकरम[स०] ख़ुदाए वाहिद व यक्ता का एलान करते हैं और लातो उज़्ज़ा और हुबुल को एक बेबस हक़ीर पत्थर के सिवा कुछ भी नहीं समझते और उन पेशानियों की ज़रा भी इज़्ज़त नहीं करते जो उन बुतों के सामने सजदे करती हैं और उन लोगों को जानवरों से बदतर जानते हैं जो इन बुतों को अपना आबाई और ज़रूरतें पूरा करने वाला समझते रहे हैं तो ये सब कुछ देख कर इन गुमराह इन्सानों के पास इसके सिवा और कोई रास्ता न था कि वह हुज़ूर[स०] को ख़ुदा की पनाह, मजनून कहने की जसारत व बेअदबी करें। इस जसारत का जवाब अल्लाह ने इस तरह दिया कि ख़ुद अपने रसूल[स०] से ख़िताब फ़रमायाः ''तुम अपने परवरदिगार के फ़ज़्लो करम से हरगिज़ मजनून नहीं हो'' और फिर फरमाया कि ''तुम्हारे लिये तो इस रिसालत के बदले में ऐसा हमेशा रहने वाला सवाब है जो कभी ख़त्म न होगा और तुम तो बड़े बुलन्द व अच्छे अख़लाक़ वाले हो'' और आख़िर में ये इरशाद हुआ कि ''तुम ख़ुद भी देख लोगे और जो तुम्हारे मुक़ाबले में गुस्ताख़ियाँ करते हैं वह भी देख लेंगे कि दीवाना और

मजनून कौन है।" अल्लाह! ख़ुदा के कलाम की बलाग़त व अज़्मत! कि इसे भी पसन्द नहीं किया जाता कि वह्यि इलाही का ख़िताब काफ़िर और मुश्रिक इन्सानों की तरफ़ भी हो और उन्हें सीधे तौर पर उनकी उस बेअदबी का जवाब दिया जाय बल्कि यहाँ सिर्फ़ अपने हबीब[स०] की तरफ़ से ख़िताब फ़रमाकर इन्तिहाई बलीग़ अन्दाज़ में उन हक़ का इन्कार करने वालों की गुमराही और बेअदबी का जवाब भी कितना मुँहतोड़ कि इस दीवानगी का सुबूत तो अनक़रीब अपने आप मिल जायगा कि कौन दीवाना है। आने वाली तारीख़ बतायेगी, मुस्तक़बिल के तारीख़ी पन्ने इस जसारत के जवाब को उभार कर पेश कर देंगे और दुनिया ख़ुद अपनी आँखों से देख लेगी कि मजनून कौन था और समझदारी और अक़्लमन्दी किसके पास थी, कौन हक़ पर था और कौन बातिल पर।

आज वह दीवाने इन्सान जो रसूले अरबी[स०] की शान में गुस्ताख़ियाँ करते थे कायनात के अंधेरों में और ज़िल्लत व रुसवाई के गहरे ग़ारों में इस तरह गुम हो चुके हैं कि उनका कहीं नाम और निशान नज़र नहीं आता। न उनका इक़्तेदार है न उनकी दौलत व इज़्ज़त है और न उनकी शान व शौकत बाक़ी है मगर वह यतीमे अब्दुल्लाह[स०] जिनकी बारगाह में वह तागूती गिरोह गुस्ताख़ियाँ किया करता था आज बनी नौए इन्सान के ज़हन व ज़मीर पर हुक्मरानी कर रहा है और इस बुलन्द तरीन इन्सान की लाई हुई शरीअत और किताबे इलाही पूरी इन्सानियत के लिए सरचश्म-ए-हिदायत है। इन आयात में अख़्लाक़े नबवी की मदहो सना की गई है। बिला शुबा आपकी ज़ाते गिरामी बेहतरीन अख़्लाक़ की उस मंज़िल पर थी जहाँ किसी और का गुज़र नहीं हो सकता। आपकी सीरते पाक और बुलन्द किरदार का एतेराफ़ तो उन लोगों को भी था जो आपके सख़्त तरीन दुश्मन थे। इन्सानी अख़्लाक़ के हज़ारहा गोशे हैं मगर हुज़ूर की ज़ाते अक़्दस अख़्लाक़ की हर क़िस्म और हर रुख़ के लिए बेमिसाल नमूना थी। उम्महातुल मोमिनीन[रज़ि०] और साहब-ए-केराम[रज़ि०] का मुत्तफ़ेक़ा बयान है कि हुज़ूर इन्तेहाई नर्म मिज़ाज थे और बेहतरीन सीरत के मालिक थे। हज़रत उम्मुल मोमिनीन ख़दीजतुल कुबरा ने एक मरतबा ख़िदमते गिरामी में अर्ज़ की थीः "ख़ुदा की क़सम आप सिल-ए-रहम करते, मक़रूज़ लोगों का बोझ उठाते हैं, ग़रीबों की मदद करते हैं, महमानों की ज़ियाफ़त फरमाते हैं, हक़ की नुसरत व हिमायत करते हैं और मुसीबतों और परेशानियों में लोगों के काम आते हैं। इसलिए यक़ीनन ख़ुदा आपको ग़मगीन नहीं करेगा।" सरवरे कायनात की अमानतदारी ऐसी थी कि आपके दुश्मन तक आपको "अमीन" के लक़ब से याद करते थे और इसी अमानत की सिफ़त का ये नतीजा था कि हिजरत की शब में जब हज़रत अली बिन अबी तालिब को अपने बिस्तर पर आराम करने का हुक्म दिया तो साथ ही ये भी हिदायत फ़रमाई थी कि मेरे पास मक्के वालों की जितनी भी अमानतें हैं उन सब को वापस करना उसके बाद मदीना की तरफ रवाना होना। आम लोग ऐसे वक़्तों में इन बातों का कहाँ ख़याल रखते हैं लेकिन हज़रत सरवरे अम्बिया[स०] की ज़ाते गिरामी का कोई अमल ऐसा न था जो अमानतदारी और अद्लो इन्साफ़ के ख़िलाफ़ हो।

आप कभी किसी को बुरा नहीं कहते थे। बुराई के बदले में बुराई नहीं करते थे बल्कि उसको माफ कर दिया करते थे। आपने कभी किसी से अपने ज़ाती मामले में बदला नहीं लिया, कभी किसी शख़्स को यहाँ तक कि कनीज़ और गुलाम और जानवरों को भी तकलीफ नहीं दी, कभी किसी की जायज़ दरख़्वास्त रद्द नहीं की, अगर किसी की तरफ से कभी कोई ऐसी बात होती जो आप पर गराँ गुज़रती थी तो आप उससे आँख फेर लेते और नज़रअन्दाज़ फरमाते थे, आपने कभी किसी उम्मीदवार को मायूस नहीं किया, आपकी आदतथी कि जब कोई दूसरा बात करता तो आप उसकी बात को काटते न थे बल्कि ख़ामोशी के साथ सुनते रहते थे, इसी तरह दूसरों के मुँह से अपनी तारीफ सुनना भी पसन्द नहीं करते थे। लेकिन अगर कोई आपके एहसान का शुक्रिया अदा करता था तो उसे क़ुबूल फ़रमाते थे।

एक वह वक़्त था जब आँहज़रत ने क़ैसरे रूम हिरक़्ल को इस्लाम की तरफ दावत देने के लिए ख़त

भेजा था तो उसने बड़े इन्तिज़ाम के साथ दरबार मुनअक़िद किया और हुक्म दिया कि बैतुल मुक़द्दस में जो अहले मक्का तिजारत की ग़रज़ से आये हैं उन्हें बुलाया जाय, इत्तेफ़ाक़ से उस ज़माने में अरब ताजिरों के साथ अबुसुफ़यान भी मुक़ीम था जो उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुआ था, जब ये लोग दरबार में आए तो क़ैसर ने अबुसुफ़यान से रसूले करीम के मुताल्लिक़ बहुत सी बातें दरयाफ़्त की थीं। उनमें से एक ये बात भी दरयाफ़्त की थी कि उन्होंने कभी किसी अहद व क़रार की ख़िलाफ़वर्ज़ी तो नहीं की है तो उसने जवाब दिया था कि नहीं ऐसा कभी नहीं हुआ फिर क़ैसर ने पूछा कि आख़िर वह कहते क्या हैं तो अबूसुफ़यान ने कहाः वह कहते हैं कि एक ख़ुदा की इबादत करो, किसी और को ख़ुदा का शरीक न बनाओ, नमाज़ पढ़ो, पाकदामनी इख़्तियार करो, सच बोलो और सिल-ए-रहम करो। इस पर क़ैसर ने कहा कि अगर मैं वहाँ जा सकता तो ऐसे इन्सान के पैर धोकर पीता। इसी तरह जब सन् 5 बेअ़सत में मुसलमानों ने मुल्के हबश की तरफ़ हिजरत की थे तो वहाँ के बादशाह नजाशी से हज़रत जाफ़र इब्ने अबी तालिब[अ०] ने सीरते सरवरे कायनात[स०] के बारे में ये कहा था कि ऐ बादशाह हम लोग जाहिल थे, हम में हर तरफ़ ज़ुल्मो सितम का रिवाज था और ताक़तवर लोग कमज़ोरों के लिए अज़ाब बने हुए थे इस दरमियान में हम ही में से एक शख़्स पैदा हुआ जिसने हमें इस्लाम की दावत दी, लोगों को बुतों की पूजा से रोका और हुक्म दिया कि वह सच बोला करें, ख़ून बहाने से बचें, यतीमों का माल न खायें, पड़ोसियों को तकलीफ न दें और उनके हक़ अदा करें, नमाज़ पढ़ें, रोज़े रखें और ज़कात अदा करें हम सब उन पर ईमान लाए हैं और उसी ईमान के वजह से हमारी क़ौम हमारी दुश्मन बन गई है। एक वह भी तारीख़ी वक़्त था जब हज़रत अबुतालिब और दूसरे बनी हाशिम के घराने वाले सरवरे कायनात[स०] की शादी का पैग़ाम लेकर हज़रत ख़दीजा[रज़ि०] के वालिद के पास गये तो हज़रत ख़दीजा[रज़ि०] ने अपने चचाज़ाद भाई वरक़ा बिन नौफ़ल से कहा कि वरक़ा! तुम को तो तमाम सरदाराने अरब का हाल मालूम है अगर तुम अब्दुल्लाह के बेटे के बारे में कुछ कमी जानते हो तो मुझ से ज़रूर बयान करो। वरक़ा आसमानी किताबों के ज़बरदस्त आलिम थे और ख़ुद मज़हबे ईसाई के पैरो थे। उन्होंने जवाब दिया कि अच्छा ख़दीजा मैं तुम्हारे हुक्म की तामील करता हूँ और उनकी कमियाँ बयान करता हूँ: ''उनका नसब बेमिसाल है, उनका ख़ानदान बहुत बड़ा है। उनकी आँखें सुरमे वाली हैं, उनके अख़लाक़ बहुत ख़ूबसूरत हैं, उनका एहसान सब पर आम है और उनकी सख़ावत का मरतबा बहुत बुलन्द है। हज़रत ख़दीजारज़ि० ने फिर कहाः वरक़ा ये तो तुम उनकी फ़ज़ीलत बयान कर रहे हो मैंने तो उनकी कमियाँ पूछी थीं। वरक़ा ने कहा हाँ ख़दीजा[रज़ि०] सुना! अब बयान करता हूँ: उनका चेहरा चाँद से ज़्यादा नूरानी, उनकी पेशानी बेहद रौशन, उनकी आँखें हद से ज़्यादा हसीन और ख़ूबसूरत, उनके रुख़सार लाल गुलाब से ज़्यादा ख़ूबसूरत, उनके बदन की ख़ुशबू मुश्क की ख़ुश्बू से तेज़, उनका कलाम शकर से ज़्यादा मीठा, और जब राह चलते हैं तो मालूम होता है कि चौधवीं रात का चाँद निकल आया और इस तरह सख़ावत करते हुए चलते हैं जैसे मोतियों भरे बादल मोती बरसा रहे हों। हज़रत ख़दीजा[रज़ि०] ने फरमाया कि वरक़ा तुम ने फिर उनकी कोई कमी नहीं बयान की और फ़ज़ाएल ही ज़िक्र कर दिये आख़िर उनमें कमी क्या है? वरक़ा ने कहा ख़दीजा[रज़ि०]! ''अगर मुहम्मद में कोई कमी न हो तो मैं कहाँ से ले आऊँ और फिर मेरी क्या मजाल कि मैं मुहम्मद[स०] के फ़ज़ाएल बयान कर सकूँ ये तो बस एक मामूली सा तज़किरा था उन सिफ़ात को जो उनकी ज़ाते गिरामी में मौजूद हैं और एक क़तरा था उस समन्दर का।'' और हक़ीक़त तो ये है कि हज़रत ख़दीजा[रज़ि०] ख़ुद भी कमालात और सिफ़ाते मुहम्मदी से ख़ूब वाक़िफ़ थीं मगर चाहती ये थीं कि दूसरों की ज़बान से भी इस हासिले गुलिस्ताने कायनात की मदहोसना सुन लें और ये देख लें कि समझ और अक़्ल रखने वालों के दिलों पर इसका शाहकारे क़ुदरत का किस तरह सिक्का जमा हुआ है।

मज़हब और आपसी इख़्तेलाफ़

हुज्जतुल इस्लाम वलमुस्लिमीन मौलाना सै० हसन नक़वी साहब

मज़हब की ज़रूरत और अहमियत के मुक़ाबले में ये एतेराज सुनाई देता है कि अगर सभी मज़हब वाले अपने मज़हब के पाबन्द हो जाएं तब भी इख़्तेलाफ़ों का होना लाज़मी होगा। इसलिए कि इस हक़ीक़त से इनकार नहीं किया जा सकता कि हर मज़हब के दूसरे मज़हबों से कुछ उसूल टकराते हैं और जब हर मज़हब का पाबन्द अपने मज़हब पर अमल करेगा तो लाज़मी तौर पर ये उसूल उनकी माद्दी ज़िन्दगी पर भी असर डालेंगे जिसके बाद रहन-सहन में फ़र्क़ पैदा हो जाएगा और हर एक मज़हब वाला दूसरे से अलग रास्ते पर चलेगा जिसका लाज़मी नतीजा ये होगा कि हर दिमाग़ में दूसरे से अलग होने की समझ पैदा होगी और जितनी ज़्यादा मज़हब पर पाबन्दी सख़्त होगी उतना ही इख़्तेलाफ़ भी सामने आता जाएगा यहाँ तक कि एक आख़री वक़्त वह भी ज़रूर आएगा जब आपस में ख़ून-ख़राबा होगा जिससे इन्सानियत बिखर जाएगी और आपसी ज़िन्दगी में ऐसी ख़राबी पैदा हो जाएगी कि अम्न के फ़रिश्ते की लाश ख़ून और मिट्टी में सन जाएगी इसलिए मज़हब बजाए अम्न के पैग़ाम के जंग का पैग़ाम साबित होगा।

इस एतेराज़ का जवाब यूँ दिया जा सकता है कि ये टकराव अस्ल मज़हब की बुनियाद पर नहीं होता बल्कि इन्सानी जंगी फ़ितरत से होता है चुनानचे मज़हब से नज़र हटाते हुए दुनिया का कोई ऐसा मुल्क नहीं जहाँ कई सियासी पार्टियाँ न हों। ज़ाहिर है कि इनके उसूलों में आपस में इख़्तेलाफ़ है नहीं तो फिर अलग-अलग कैसे कही जा सकती हैं और जब अलग-अलग जमाअतों के अलग-अलग उसूल हैं तो उनके आलिमों में भी इख़्तेलाफ़ यक़ीनन होगा जिसके बाद इस तरह खींचा-तानी होगी जिस तरह मज़हब के पाबन्द लोगों में हो सकती है।

लेकिन मज़हबों के तो फिर भी महदूद उसूल हैं और सियासी जमाअतों का पैदा होना एक न ख़त्म होने वाला सिलसिला है दुनिया के मज़हब जो अपनी असल बुनियाद के एतेबार से सच्चे नहीं उनके उसूल तो अल्लाह की तरफ़ से तय किये गये हैं और जो ऐसे न हों वह भी कुछ ख़ास इम्तियाज़, और शख़्सियत वाले लोगों के बनाये हुए हो सकते हैं जो एक बड़ी जमाअत को अपना दीवाना बना सकें और अपने को ख़ालिक़ से जोड़ सकें। अब ये ज़ाहिर है कि अल्लाह की तरफ़ से तय किये हुए उसूल अलग-अलग और टकराव वाले नहीं हो सकते और ख़ास शख़्सियत रखने वाले इन्सान भी सैकड़ों साल में कुछ ही पैदा होते हैं इसलिए मज़हबों की फिर भी एक हद है लेकिन सियासत एहसासों और ख़यालों के अलग-अलग नज़रियों से पैदा होती है और इन्सानी एहसासों की कोई हद नहीं, इसलिए वह क़ानून जो एहसासों और ख़यालों से बनते हैं उनकी भी कोई हद नहीं होगी नतीजा ये होगा कि मज़हब की पाबन्दी से कुछ इख़्तेलाफ़ पैदा होंगे और ख़यालों की पाबन्दी से बहुत ज़्यादा इख़्तेलाफ़ पैदा होंगे तो मज़हब को ख़त्म करना

महदूद इख़्तेलाफ़ को मिटाना है और सियासत की हुकूमत क़ायम करना बहुत से इख़्तेलाफ़ों का पैदा करना है।

इसलिए सिर्फ़ मज़हब पर इल्ज़ाम लगाना कहाँ का इन्साफ़ है? हाँ अगर इख़्तेलाफ़ों को ख़त्म करना है तो पूरी दुनिया की या तो एक सियासी जमाअत बनायी जाए या वक़्ती तौर पर पूरी दुनिया में एक मज़हब बाक़ी रखा जाए लेकिन पूरी दुनिया में वक़्ती तौर पर एक सियासत चल जाए तो भी इख़्तेलाफ़ पैदा होंगे क्योंकि सियासत हमारी बाहरी, बल्कि ज़ाहिरी ज़िन्दगी में बन्दिश पैदा कर सकती है, लेकिन अन्दुरूनी ज़िन्दगी उसकी पकड़ से बाहर है नफ़्स की हरकतों पर सियासत बाँध नहीं बाँध सकती वह सिर्फ़ मज़हब ही है जो ज़िन्दगी के हर हिस्से में ज़िन्दगी की हर-हर साँस के साथ-साथ रहता है इसलिए मालूम हुआ कि आख़िर में वह मज़हब ही हक़ है जो सभी दूसरे मज़हबों पर छा जाए और इत्तेहाद का नुक़्ता हो सकता है। ✦✦✦

बक़िया .... मुसलमानों का वास्तविक बहुदल

मुहम्मद[स०] दूसरों को भी साथ लाते। हुसैन यदि करबला में केवल अपने प्राण दे देते तो मुसलमानों के लिये पूर्णरूपेण उचित आदर्श न हो पाता इस लिये यह कहा जा सकता था कि वह मासूम (पापहीन) थे, जो मासूम न हो वह इतनी कठिन परीक्षा नहीं दे सकता। हुसैन अपने साथ यदि केवल बनी हाशिम को लाये होते तो यह कहा जा सकता था कि वह हाशमी रक्त का प्रभाव था, वह फ़ातिमा के दूध की शक्ति थी जो केवल बनी हाशिम, या अली व फ़ातिमा की संतानों तक ही सीमित थी दूसरे के बस की यह बात नहीं है परन्तु इमाम हुसैन ने अपने साथ अपने कुटुम्बियों (सम्बन्धियों) के अतिरिक्त बहुत से साथियों एवं सहायकों (समर्थकों) को साथ लिया जिनके विचारों, भावनाओं एवं कार्यों में एकीकरण का कारण इस्लाम की सहायता के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता। वास्तव में इतने एक विचार, एक हृदय, एक वाणी, दृढ़-निश्चयी पूर्णरूपेण अडिग मुसलमान संसार के सम्मुख न करबला की घटना के पूर्व कभी आये तथा न कर्बला की घटना के पश्चात् एवं यह करबला की घटना का वह विशेष पहलू है जिसके कारण मुसलमानों को सदैव इसकी स्मृति माननी चाहिए। ✦✦✦

इल्तेमासे तरहीम

मोमिनीन केराम से गुज़ारिश है कि एक बार सूर-ए-फ़ातेहा और तीन बार सूर-ए-तौहीद की तिलावत फ़रमाकर जुमला मरहूमीन ख़ुसूसन मिर्ज़ा मुहम्मद अक्बर इब्ने मिर्ज़ा मुहम्मद शफ़ी की रूह को ईसाले फ़रमाएं।

Mohd. Alim

Proprietor

Nukkar Printing & Binding Centre

26-Shareef Manzil, J. M. Road, Husainabad, Lucknow-3

Ph: 0522-2253371, 09839713371 e-mail: nukkar.printers@gmail.com

नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन रजि० का परिचय

uwjsfgnk;r QkmUMs'ku रजि० लखनऊ

LFkkiuk%15 जमादिउल अव्वल 1424 हि0/16 जुलाई 2003

Le`fr esa% समाज सुधारक महान धर्मगुरु आयतुल्लाह **x¶kjrekWc** सैयद दिलदार अली नक़वी रह० (1753 ई0/1166 हि० – 1820 ई० /1235 हि०)

laLFkkid&vè;{k%(क़ायदे मिल्लत) **ekSykuk lS;n dYcs tokn** (साहब क़िब्ला म०ज़ि०)

gekjk fe'ku: हज़रत गुफ़राँमॉब (रह0) दक्षिण एषिया के सर्वप्रथम मुजतहिद (धर्म–विधि शोध–विद्वान) हैं जिनकी रचनाओं, संकलनों और प्रयासों ने धर्म को सही रूपरेखा में प्रस्तुत करने का धर्मसंग्राम किया, सन्मार्ग–ज्योति (नूरे हिदायत) को दक्षिण एशिया के कोने–कोने तक पहुँचाने का कृतज्ञतादायी प्रयत्न किया और षिया समाज को धार्मिक नेतृत्व दिया। उन्हीं के मिशन का विस्तार हैः **uwjsfgnk;r QkmUMs'ku**। उन्हीं के अन मिट चिन्ह हमारे मार्ग–दर्शक हैं।

आज के सूचना–प्रायोधिकि (IT) के विकास के काल में जब हर प्रकार की सकारात्मक और नकारात्मक सूचनाओं की भरमार से मानव मस्तिष्ट बोझल हो चुका है, ऐसे में इस्लाम को वास्तविक रूप में सही ढंग से आधुनिक भाषा और मुहावरे में प्रस्तुत करना समय की सबसे बड़ी ज़रूरत है। इसी को देखते हुए हम ने प्रकाशन विभाग को संगठित किया है। फाउन्डेषन एक आदर्श मासिक पत्रिका **^'kqvk, vey*** (हिन्दी उर्दू) बड़े मनोरम गेटअप में प्रकाशित कर रहा है। इस पत्रिका में उच्चस्तरीय नये–नये लेखों के साथ हम अपने पहले के गौरवषाली और कालप्रतीक रचनाकारों की सदाबहार प्रकार की कृतियाँ भी धीरे–धीरे प्रकाश में ला रहे हैं। साथ ही हर साल 'मजालिसे अज़ीम' (मौलाना कल्बे आबिद साहब क़िब्ला ता०रा० की याद में होने वाली वार्षिक मजलिसों) के अवसर पर **^[kkunkusbftrgkn uEcj*** (गुफ़राँमॉब के वंशजों को समर्पित स्मृतिका) भी निकाला जाता है।

शिक्षा भी सूचना की सहपाठी है। इस ओर भी हमारा विशेष ध्यान है। **bLykfed LVMht +lsUVj** और **edrcrqTt+gjk** स्थापित किये जा चुके हैं जो क्रमशः छात्रों और छात्राओं को अलग–अलग आवष्यक धार्मिक शिक्षा देने में सक्रिय हैं।

IT और शिक्षा उद्देशहीन होकर रह जाती है यदि उनके लाभ समाज के हर वर्ग तक न पहुँचाए जा सकें, विशेषकर दलित, बेसहारा, पिछड़े हुए लोगों को सहारा देकर उन्हें उठाया न जाए, उनकी कमियों और बुराइयों को दूर न किया जाए। इसीलिए समाज–कल्याण, समाज की कुरीतियों का सुधार, ग़रीब और बेसहारा लोगों की सहायता, रोगियों के इलाज का उचित प्रबन्ध करना हमारा ध्येय है।

समाजकल्याण और समाजसुधार के आधीन ही वक़्फ़ों की सुरक्षा भी आती है। हमारे पूर्वजों ने अपने नेक भाव से जो वक़्फ़ बनाये थे वे हमारी बड़ी भारी पूँजी हैं, उनके उचित रख–रखाव और विकास के लिए हम सदा तत्पर रहेंगे।

ध्येय और उद्देश

i z l Unsk

- ❖ देश में आपसी भाईचारे और मेलमिलाप का माहौल पैदा करना।
- ❖ देश–प्रेम की भावना को विकास देना।
- ❖ राष्ट्र और समाज की प्रगति के लिए काम करना।

f' k{kk

- ➢ शिक्षा के विकास के लिए शिक्षा–संस्थाओं की स्थापना, संगठन और प्रबन्धन।
- ➢ प्राइमरी स्तर से उच्च स्तर तक शिक्षा की व्यवस्था करना।
- ➢ टेकनिकल शिक्षा और धर्म–शिक्षा केन्द्रों की स्थापना, संगठन और प्रबन्धन।
- ➢ पुस्तकालयों और वाचनालयों (Reading Rooms) का प्रबन्ध करना।

xjhc vkSj csgkjksa dh lgk;rk

- ▪ समाज के ग़रीब वर्ग के बच्चों की निःशुल्क शिक्षा और विकलांगों, अनाथों और बेवाओं, बेसहारा, वृद्धजनों के लिए, जहाँ तक सम्भव हो, रोज़गार के साधन जुटाना।
- ▪ ग़रीब निर्धन महिलाओं को उचित प्रशिक्षण देकर रोज़गार से लगाना।

izdk'ku&izlkj.k

- ▪ फाउन्डेशन के विचारों को लोगों तक पहुँचाने के लिए पुस्तकें और पत्रिकाएँ प्रकाशित करना।

lekt dY;k.k

- ❑ समाज में फैली ग़लत रीति रिवाज और बुराइयों को दूर करने के लिए काम करना, बिना दहेज की शादी कराना, ग़रीब लड़कियों और विधवा औरतों की शादी अपने ख़र्चे से कराना।
- ❑ समाज में फैली हुई बुराईयों, अशिष्टताओं और कट्टरपन का विरोध करना और उन्हें दूर करने के लिए काम करना।

fpfdRlk

ग़रीब लोगों को अच्छी से अच्छी चिकित्सा के लिए धर्मार्थ अस्पताल और मेडिकल कालेज (सरकार की अनुमति और अनुमोदन के बाद) खोलना जहाँ आधुनिक विधि से इलाज और निःशुल्क दवा उपलब्ध कराना।

सेवाएँ और संकल्प

मासिक 'शुआए अमल'

(उर्दू–हिन्दी), लखनऊ

- ❑ 15 जमादिउल अव्वल 1425 हि० / जुलाई 2004 ई० से हर माह नियमित प्रकाशित।
- ❑ मनोरम कवर और आकर्षक गेटअप, आन्त्रिक विशेषताओं से सुसज्जित
- ❑ स्तरीय ज्ञानात्मक व शोधलेखों के द्वारा समाज के धर्मबोध के लिए लगातार तत्पर।
- ❑ विशेषांको के प्रकाशन पर विशेष ध्यान
- ❑ अब तक प्रकाशित विशेष अंक मुहर्रम नम्बर (हर साल), सैय्यिद–ए–आलम नम्बर, इमाम हसन अस्करी नम्बर, सैय्यिदा ज़ैनब नम्बर, मुरसले आज़म नम्बर, इत्तेहादे इस्लामी नम्बर, अरबईन नम्बर
- ❑ वार्षिक राशिः 200/–रु (दो सौ रुपये) मात्र

bLykfed LVMht +l sUVj

स्थापनाः 15 जमादिउल अव्वल 1427 हि० / जून 2006 ई०

- ❑ स्कूल कालेज के क्षात्रों के लिए दीनियात (धर्मशिक्षा), तजवीद (कुर्आन–पाठ का

शास्त्र), अरबी और फारसी की शिक्षा का प्रबन्ध।

- ❑ निबन्ध–लेखन और शोधकार्यों पर ख़ास ध्यान।

edrcrqt+ gjk

- ❑ वास्तव में 1 जनवरी 1984 को रहमतमॉब मौलाना सैयद कल्बे आबिद साहब क़िब्ला ता0रा0 के द्वारा स्थापित विशेष मकतब का पुनर्जीवन।
- ❑ छात्राओं के लिए अरबी, फारसी, दीनियात और तजवीद की शिक्षा का प्रबन्ध।
- ❑ निबन्ध–लेखन और शोधकार्यों पर ख़ास ध्यान।

menrqy myek iqLrdky; ,oa jgerekWcW okpuky;

- ❑ कई हज़ार धर्म पुस्तकों का बहुमूल्य संग्रह।
- ❑ सभी के उपयोग के लिए समर्पित।

le; %9 cts iwokZg~u %ls12 cts nksigj rd ¼kqØokj cUn½

bekeng bLyke cqd fMiks

- ❑ फाउण्डेशन और दूसरे प्रकाशकों की पुस्तकों की बिक्री का विशेष प्रबन्ध

izdk'ku&izlkj.k

आधुनिक समय की माँग के अनुरूप पुस्तकों और पुस्तिकाओं का प्रकाशन

कुछ शीर्षक:

- ✓ *इमाम ज़ैनुल आबिदीन*अ0 *की ज़िन्दगी* (द्वारा सै0 अली खामेना–ई का) उर्दू अनुवाद
- ✓ *तसव्वुरे महदी* (द्वारा शहीद बाक़िर सद्र)– उूर्द अनुवाद
- ✓ *इन्साने आज़म* (उर्दू में अमीरुल मोमिनीन अ0 की जीवनी) द्वारा अल्लामा हिन्दी सै0 अहमद नक़वी
- ✓ *अमीरे मुख़्तार* द्वारा मौलाना सै0 हसन ज़फर नक़वी (कराची) उूर्द
- ✓ *निशाने राह* द्वारा मौलाना सै0 हसन ज़फर नक़वी (कराची) – हिन्दी अनुवाद
- ✓ *अलमदारे कर्बला* (हिन्दी)–'शकील' शम्सी
- ✓ *हिन्दुस्तान में शीईयत की तारीख़* (उर्दू)
- ✓ *गुलकदए मनाक़िब* (उर्दू काव्य–संग्रह)– 'फ़ाख़िर', 'ज़ाख़िर', 'फ़ातिर', 'कामिल'
- ✓ *शिया–सुन्नी समझौता* (नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन)
- ✓ *मुहकम आयात* (उर्दू) डा0 रज़ा हुसैन 'रम्ज़'
- ✓ *सहीफ़तुस्साजिदीन* (उर्दू) प्रिंस सरताज मिर्ज़ा
- ✓ *सहयूनी दहशतगर्दी* (उर्दू) पत्रकार 'शकील' शम्सी
- ✓ *इस्राईल का आतंकवाद* (हिन्दी) पत्रकार 'शकील' हसन शम्सी
- ✓ *कलामे ज़ायरा* (उर्दू) मरज़िया शम्सी 'ज़ायरा'
- ✓ *इमाम हुसैन का संन्देश मानवता के नाम*– मौलाना अली नक़ी नक़वी
- ✓ *इस्लामी अक़ीदे* – द्वारा सै0 मुजतबा मूसवी लारी अनुवादक–तज़्हीब नगरौरी
- ✓ *दुआए कुमैल* (उर्दू अनु0) मौलाना शैख़ मुहसिन अली
- ✓ *आसरा* (उर्दू) 'तनवीर' नगरौरी
- ✓ *दुर्रे नायाब* (उर्दू) यावर हुसैन रिज़वी 'यावर' बहराइची
- ✓ *सिराते सुकून* (उर्दू) डा0 रज़ा हुसैन 'रम्ज़'
- ✓ *अनवारे मासूमीन* (उर्दू–चौदह मासूमों की जीविनियाँ) डा0 नूरुन्निसा 'नूर'
- ✓ *ख़ानदाने इज्तिहाद नम्बर* – हर साल

; kstuk, j

(पहले उर्दू फिर हिन्दी, अंग्रेज़ी, उसके बाद दूसरी भारतीय भाषाओं में लेखन, संकलन, अनुवाद)

- चौदह मासूम और महान धार्मात्माओं की जीवनियाँ
- ख़ानदाने इज्तिहाद के और दूसरे उलमा, लेखकों की उच्चकृतियों के संकलन, सम्पादन के बाद प्रकाशन
- शियों और शिया धर्म का इतिहास
- शिया विद्वानों, साहित्यकारों और बुद्धजीवियों के जीवन–परिचय और उनके ज्ञान व साहित्य के क्षेत्र में महान कार्य
- शिष्टाचार और रीति सुधार पर सर्वोपयोगी साहित्य
- भारत में शिया पुण्यस्थलों और वक़्फ़ों की इन्वेन्टरी
- तुहफए इस्नाअशरिया, इमादुल इस्लाम, नुज़हए इस्ना अशरिया हदीक़ए सुलतानी, अबक़ातुल अनवार जैसी उच्चस्तरीय संदर्भ–पुस्तकों का सारांशीकरण, सम्पादन और अनुवाद।

(परिस्थितियों, संसाधनों और मानवशक्ति के अनुसार दूसरे उपयोगी विषय भी सम्मिलित किये जाएँगे)

[l kef; d ekxZ kand sv uq i 'kkstk d ksc<kok nsuk gekjk pyu]

आप से निवेदन

- हमें अपना अनमोल साथ और मदद दें।
- धर्म से जुड़ी समस्याओं के लिए हम से सम्पर्क करें।
- सहमे इमाम (ख़ुम्स) से हमारी मदद करें। [हमें मरजओं ख़ासकर महान आयतुल्लाह आक़ाए सीस्तानी की ओर से सहमे इमाम में से दस लाख रुपये साल लेने की इजाज़त है।]
- दूसरे धार्मिक राशि जैसे सदक़ा, फ़ितरा, क़ुर्बानी की खालों के मूल्य, इमाम ज़ामिन आदि से हमारी सहायता करें।
- हमारी किसी चुनी हुई किताब/बुकलेट या मासिक शुआए अमल के किसी अंक को अपने मरहूम स्वर्गीय रिश्तेदार के ईसाले सवाब में छपवाकर बाँटें।
- आपके पास कोई छपी/बेछपी मज़हबी किताब या पाण्डुलिपि, मरसिया या मरसियों की किताब, नौहा या क़सीदों की बयाज़ आदि हों तो हमें लाइब्रेरी के लिए प्रदान कर दें। इस तरह उसकी देखरेख के साथ अच्छा और अधिक उपयोग भी हो सकेगा।
- मसिक 'शुआए अमल' और हमारे दूसरे प्रकाशनों के नियमित ग्राहक बनें और उनके प्रकाशन में सहयोग दें।

eq[; ky; %

नूरे हिदायत फाउन्डेशन

इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमॉब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ–3 (भारत)

वेबसाइटः–
www.noorehidayat.com
www.al-ijtihaad.com

ई–मेलः–
noorehidayat@gmail.com
noorehidayat@yahoo.com

फोनः–
0522–2252230
0522–4062731

मोबाइलः
09335276180

नूरे हिदायत फाउण्डेशन

इमामबाड़ा ग़ुफ़रानमआब, चौक लखनऊ

जनाब ....साहब सलामुन अलैइकुम

मिज़ाजे आली!

नूरे हिदायत फाउण्डेशन ने एक बहुत बड़े इल्मी (ज्ञान के) काम का बेड़ा उठाया है यानी पहले के शिया आलिमों, अदीबों, शायरों की छपी और ग़ैर छपी किताबों की हिफ़ाज़त और उनमें से अहम और ज़रूरी किताबों की छपाई। इस वक़्त दसियों हज़ार किताबों की फिलमिंग का काम है जिससे छपी और बेछिपी किताबों को सी०डी० पर महफ़ूज़ करके उनका प्रिंट निकाल कर किताब की सूरत में महफ़ूज़ किया जायेगा। इमामबाड़ा गुफ़रानमआब की लाइब्रेरी का काम पूरा होने के बाद हिन्दुस्तान की दूसरी बड़ी और छोटी लाइब्रेरियों में जाकर यही काम अन्जाम दिया जायेगा। साथ ही एक बड़ी लाइब्रेरी का क़ायम करना (स्थापना) भी इदारे की नज़र में है। इसलिए अगर आपके पास कोई छपी या हाथ की लिखी दीनी किताब, मरसिया या मरसियों की किताब, नौहे या क़सीदों की बयाज़ आदि हो तो हमें लाइब्रेरी के लिए देने का कष्ट करें। इसी तरह अज़ा के दिनों में इमाम हुसैन[अ०] और उनके साथियों के कारनामों से जुड़ी हिन्दी, उर्दू और अंग्रेज़ी में किताबों और किताबचों को छाप कर शियों में और ख़ास तौर पर दूसरे मज़हब के लोगों में हर साल बांटना है। शुरुआत में कम से कम पचास किताबचे और पाँच किताबें और हर किताब व किताबचा कम से कम दो हज़ार और ज़्यादा से ज़्यादा पाँच हज़ार छापना है मगर इस काम के लिए एक बड़े धन की ज़रूरत है। इसलिए आपसे गुज़ारिश है कि अपने मरहूम वालदैन और दूसरे रिश्तेदारों के लिए उनके नाम से कोई न कोई इदारे की चुनी हुई किताब या किताबचा या मासिक 'शुआ-ए-अमल' का कोई अंक छपवाएं और ज़रूरतभर लेकर अपने इलाक़े में बांटे बाक़ी के लिए आप इदारे को इजाज़त दें कि वह दूसरे शहरों, क़सबों और देहातों में मुफ़्त बांटने के लिए भेज दें।

इदारे को मराजेए केराम ख़ासकर आक़ाए सीस्तानी मद्दज़िल्लहू और दफ़्तरे रहबरे मुअज़्ज़म आयतुल्लाहिल उज़्मा सै० अली ख़ामेना-ई मद्दज़िल्लहू से हर साल दस लाख रुपये सहमे इमाम[अ०] (ख़ुम्स) लेने की इजाज़त हासिल है। इसलिए गुज़ारिश है कि ख़ुम्स या दूसरी शरअी रक़में जैसे सदक़ा, फितरा, क़ुर्बानी की खालों के पैसे या इमाम ज़ामिन वग़ैरा फाउण्डेशन को मनीआर्डर या ड्राफ़्ट की सूरत में Noorehidayat Foundation, Lucknow के नाम भेजें ताकि यह अहम काम ज़्यादा से ज़्यादा और जल्दी से जल्दी पूरा हो सके।

आपके दीनी और समाजी जज़्बे से बड़ी उम्मीद है कि आप हमें निराश न करेंगे।

मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जाएसी

फोनः 0522-2252230
मोबाइलः 09335276180

सचिव
नूरे हिदायत फाउण्डेशन, लखनऊ

मुख्य समाचार

बदजबान अफ़राद के खिलाफ़ मुजाहेरा

दौरे हाज़िर में ज़राए इबलाग़ की तरक़्क़ी से जहाँ बहुत सी आसानियाँ पैदा हुई हैं वहीं बहुत से नुक़सान भी उठाने पड़े हैं, ज़राए इबलाग़ से जहाँ ये फ़ायदा हुआ कि चन्द लम्हों में एक बात पूरी कायनात में फैल जाती है वहीं इससे ये नुक़सान भी हो रहा है कि कभी किसी बात को तोड़-मरोड़ कर फैला दिया जाता है और असल मतलब छुपाकर रखा जाता है। पिछले दिनों ऐसा ही हुआ जब ''महिला आरक्षण बिल'' के सिलसिले में एक मख़सूस चैनल ने क़ायदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद साहब से उनका नज़रिया मालूम किया और जवाब में क़ाएदे मिल्लत ने हक़ीक़ी इस्लामी नज़रिया पेश किया और इस्लाम में औरतों का क्या मरतबा है बयान फरमाया तो कुछ शरपसन्द अनासिर जिनमें मौलाना से हसद रखने वाले कुछ नाम नेहाद मोलवी हज़रात भी शामिल थे उन्होंने क़ाएदे मिल्लत के बयान को तोड़-मरोड़ कर पेश किया कि असल मतलब ही ग़ायब कर दिया। इस अफ़सोसनाक सूरते हाल से निपटने के लिए 16 मार्च 2010ई० को मीटिंग की सूरत में दरगाह हज़रत अब्बास में एक मुशावरती जल्सा मुनअक़िद हुआ कि आख़िर अब होशमन्द अफ़राद क्या इक़दाम करें? याद रहे कि इस मुशावरती जल्से में भी क़ाएदे मिल्लत की आवाज़ पर तक़रीबन 6-7 हज़ार का मजमा इकटठा हो गया। क़ाएदे मिल्लत ने दौराने तक़रीर फरमाया कि जिन लोगों ने ग़लत बयानियाँ की हैं चाहे वह शाइस्ता अम्बर हों या जावेद अख़्तर हों उन्हें इस्लाम की ''अलिफ़, बे'' भी नहीं मालूम है जिसका खुला सुबूत उनका पेशा गाना-बजाना वग़ैरा है लेकिन इसके बाद भी इस्लाम के मसले में अपनी टाँग अड़ाना फ़र्ज़ समझते हैं इस मुशावरती जलसे में तै पाया कि आने वाले जुमा यानी 19 मार्च 2010ई० को IBN7 और बदज़बान अफ़राद को लगाम देने के लिए एक अज़ीम एहतेजाजी जुलूस बाद नमाज़ जुमा क़ाएदे मिल्लत की क़यादत में आसफ़ी इमामबाड़े से शहीद स्मार्क तक जायगा, तै प्रोग्राम के तहत जुलूस में तक़रीबन साठ हज़ार का मजमा। जुलूस में महिलाएं भी बड़ी तादाद में अमरीका मुर्दाबाद, इस्राईल मुर्दाबाद, IBN7 मुर्दाबाद, जावेद अख़्तर मुर्दाबाद, शाईस्ता अम्बर मुर्दाबाद के नारे लगा रही थीं लोगों ने अपने हाथों में जो बैनर लिये हुए थे उनमें कुछ इस तरह के नारे लिखे थेः ''कल्बे जवाब हमारे लीडर हैं'', ''IBN7 मुर्दाबाद'', ''शबाना आज़मी मुर्दाबाद'', ''कल्बे जवाद ज़िन्दाबाद''।

जब जुलूस शहीद स्मार्क पहुँचा तो वहाँ जावेद अख़्तर और शाईस्ता अम्बर के पुतले जलाए गये और इसके बाद मुक़र्रिरीन ने बदज़बान अफराद के ख़िलाफ अपने ग़म और ग़ुस्से का इज़हार किया। आख़िर में क़ाएदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद साहब और मौलाना असीफ़ जायसी साहब ने बसीरत अफ़रोज़ तक़रीर फ़रमाई और अवाम को हक़ीक़त से आगाह फरमाया।

9/11 हमला अमरीका का बहुत बड़ा झूठ था: ईरानी राष्ट्रपति

ईरानी राष्ट्रपति डाक्टर महमूद अहमदी नेजाद ने 9/11 हमलों को ख़ुफ़िया इदारों की कार्यावाही क़रार देते हुए कहा कि इसका मक़सद अफ़ग़ानिस्तान पर हमले के लिए रास्ता तैयार करना था। तेहरान में सरकारी टी०वी० पर बात करते हुए ईरानी राष्ट्रपति ने कहा कि 9/11 हमला अमरीका का बहुत बड़ा झूठ था जिसकी बुनियाद शिद्दत पसन्दी के ख़िलाफ़ जंग की आड़ में अफ़ग़ानिस्तान पर हमला किया गया। उनका कहना था कि न्युयार्क के टुइन टावरज़ पर हमले ख़ुफ़िया इदारों की कारस्तानी थी। अहमदी नेजाद इससे पहले भी कह चुके हैं कि नाज़ियों के हाथों यहूदियों के क़त्लेआम के मामले की तरह 9/11 हमलों की हैसियत भी मश्कूक है।

मजालिसे ग़म

(1) ख़ानदाने इज्तेहाद के चश्मो चिराग़ और जामिया सुलतानिया के सरबराह हुज्जतुल इस्लाम मौलाना सै० मुहम्मद जाफ़र साहब ताबा सराह की मजलिसे चहल्लुम 7 मार्च 2010ई० बरोज़ इतवार सुलतानुल मदारिस में मुनअक़िद हुई जिसमें सैकड़ों लोगों ने शिरकत की ख़ासकर क़ाएदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद साहब इमामे जुमा लखनऊ ने भी शिरकत फ़रमाई और इदारा मौलाना सै० मुहम्मद जाफ़र साहब की तरहीमे रूह के लिए मोमिनीन से फ़ातेहाख़्वानी की दरख़्वास्त करता है।

(2) क़ाएदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद साहब से क़ुरबत व अक़ीदत रखने वाले और मौलाना की तहरीकों के मददगार पत्रकार यसा रिज़वी साहब ने इस दारे फ़ानी से 10 मार्च 2010ई० को इन्तेक़ाल फ़रमाया आपकी तदफीन करबला-ए-तालकटोरा में हुई आपकी तश्यीए जनाज़ा में सैकड़ों मोमिनीन ख़ासकर क़ाएदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद साहब ने शिरकत की और आपकी मजलिसे पन्जुम 14 मार्च 2010ई० बरोज़ इतवार काला इमामबाड़ा, पीर बुख़ारा, लखनऊ में मुनअक़िद हुई इदारा दुआ करता है कि ख़ुदावन्दे आलम मरहूम के पसमान्दगान और रिश्तेदारों को सब्रे जमील अता फ़रमाए नीज़ मोमिनीन से फ़ातेहा ख़्वानी की गुज़ारिश करता है।

ईरान ने एटमी प्लान्ट लगाने का एलान किया

ईरान ने इतवार से शुरु होने वाले नये ईरानी साल में नये एटमी प्लान्ट लगाने का एलान किया है। नये साल में नये न्युकिलियर प्लान्ट तामीर किये जायेंगे और इस्लामी जमहूरिया ईरान दुश्मन ताक़तों को मुदाख़लत का मौक़ा दिये बग़ैर अपने रास्ते पर चलता रहेगा। ईरान बार-बार ये बात दोहराता रहा है कि वह ऐटमी हथियार नहीं बना रहा है। वह ऐटमी एनर्जी को पुरअमन मक़ासिद के लिए इस्तेमाल करना चाहता है।

अमरीकी राष्ट्रपति बाराक ओबामा ने कहा है कि ईरान को न्युकिलियाई हथियार बनाने से रोकने के लिए उसके ख़िलाफ़ सख़्त पाबन्दियाँ लगायी जाएंगी। फाक्स न्युज़ चैनल को दिये गये एक इण्टरव्यु में मिस्टर ओबामा ने कहा कि ईरान ने मामले को सिफ़ारती तरीक़े से सुलझाने के बजाए अवाम को उनके जमहूरी और इन्सानी हुक़ूक़ से महरूम रखने पर अपना ध्यान लगाया है। ओबामा ने कहा ईरान के अड़ियल रवैय्ये की वजह से हम उसके ख़िलाफ़ सख़्त पाबन्दी लगाना चाहते हैं। उन्होंने कह कि ईरान के साथ बातचीत का रास्ता खुला रखा गया है। याद रहे कि ईरान न्युकिलियाई हथियार तैयार कर रहा है। जबकि ईरान का कहना है कि उसका न्युकिलियाई प्रोग्राम मुल्क की तरक़्क़ी और बिजली की पैदावार के लिए है। मिस्टर ओबामा ने कहा कि ईरान को न्युकिलियाई हथियार बनाने से रोकना अमरीका की पहली तरजीह है। उन्होंने कहा कि ये एक बड़ा मसला है इसलिए इसे जल्दी से जल्दी हल किये जाने की ज़रूरत है। क्योंकि अगर ईरान न्युकिलियाई हथियार तैयार कर लेता है तो पूरे मध्य एशिया के मुमालिक हथियार की दौड़ में शामिल हो जाएंगे। ओबामा ने कहा कि अगर ईरान ने ऐटम बम बनाया तो मध्य एशिया में हथियारों की ख़तरनाक दौड़ शुरु हो सकती है इसलिए तेहरान के जौहरी अज़ाएम को रोकना सबसे पहली तरजीह है। इस्राईल के साथ ताल्लुक़ात में कोई मसला नहीं आया है। उन्होंने कहा कि हमारी सबसे बड़ी तरजीहात में से एक इस बात को यक़ीनी बनाना है कि ईरान एटमी हथियार न बनाये इसीलिए तेहरान को अकेला करने के लिए आलमी बिरादरी को मुतहर्रिक कर रहे हैं ओबामा ने इल्ज़ाम लगाया है कि ईरान जौहरी प्रोग्राम पर जारी बहस के सिफ़ारती हल के बजाए अपने अवाम में जमहूरी और इन्सानी हुक़ूक़ को दबाने में ज़्यादा दिलचस्पी रखता है।

इराक़ी चुनाव में दूसरी जमातों पर मालिकी को बढ़त

इराक़ में पारलिमानी चुनाव के शुरुआती नामुकम्मल नतीजों के मुताबिक़ प्रधानमंत्री नूरुलमालिकी को दूसरी जमातों पर बढ़त हासिल है। हालिया चुनाव इराक़ पर अमरीकी हमले और सद्दाम दौर के ख़ात्मे के बाद दूसरे पारलिमानी चुनाव हैं। प्रधानमंत्री नूरुलमालिकी का ताल्लुक़ अगरचे शिया मकतबे फ़िक्र से है ताहम उन्होंने चुनावी मुहिम में इस पहचान को उभारने के बजाए ख़ुद को ऐसे रहनुमा के तौर पर पेश किया जिसने फिरक़ावाराना ख़ून ख़राबे की फ़िज़ा में सलामती बहाल की। इतवार के पारलिमानी चुनाव के ग़ैर सरकारी नतीजों के मुताबिक़ प्रधानमंत्री नूरुलमालिकी को शिया अकसरियती इलाक़े में ज़्यादा वोट मिले हैं। इराक़ के केन्द्रीय इलेक्शन कमीशन के मुताबिक़ आख़िरी नतीजों का एलान कुछ ही दिनों में, मुमकिना तौर पर जुमेरात को कर दिया जायेगा। अन्दाज़ों के मुताबिक़ इराक़ के अट्ठारह में से नौ सूबों में मालिकी के हामी इत्तेहाद को बढ़त हासिल है। आख़िरी नतीजे के हवाले से राजधानी बग़दाद के हलक़ों में डाले गये वोट इन्तेहाई अहमियत के हामिल समझे जा रहे हैं।

वज़ीरे आज़म नूरुलमालिकी के हामियों का दावा है कि उन्हें दारुलहुकूमत बग़दाद और दक्षिण में शिया बाहुल्य इलाक़े में अच्छे वोट मिले। ख़बर रसाँ इदारे के मुताबिक़ मालिकी के हरीफ़ पिछले प्रधानमंत्री और सेक्युलर नज़रियात के हामिल शिया सियासतदान अयाद अलावी को सुन्नी आबादी में ज़्यादा वोट मिले। बग़दाद हुक्काम के मुताबिक़ इन्तेख़ाबात में वोट डालने की शरह 62 प्रतिशत रही जो 2005ई० की बतायी गई 76 प्रतिशत से कम है। तीन उत्तरी ख़ुदमुख़्तार कुर्द सूबों में अलबत्ता ये तनासुब 80 प्रतिशत तक जाने के दावे किये जा रहे हैं। कुर्द आबादी के इलाक़े मुल्क के दूसरे हिस्सों के मुक़ाबले में ज़्याद पुरअमन माने जा रहे हैं। इराक़ी इलेक्शन कमीशन के ओहदेदार हमीद या-अलहुसैन के मुताबिक़ जारी ही आख़िरी फ़ैसले का एलान कर दिया जायगा। दोबारा इराक़ी वज़ारते उज़्मा के ख़्वाहिशमन्द नूरी अल-मालिकी की हुकूमत 2005ई० में सियासी जमाअतों के बीच एक समझौते के तहत तश्कील दी गयी थी। हालिया चुनाव में अलावी के अलावा मालिकी के दूसरे बड़े हरीफ़ शिया मज़हबी जमाअतों के इत्तेहाद के रहनुमा मुक़तदा अल-सद्र हैं।